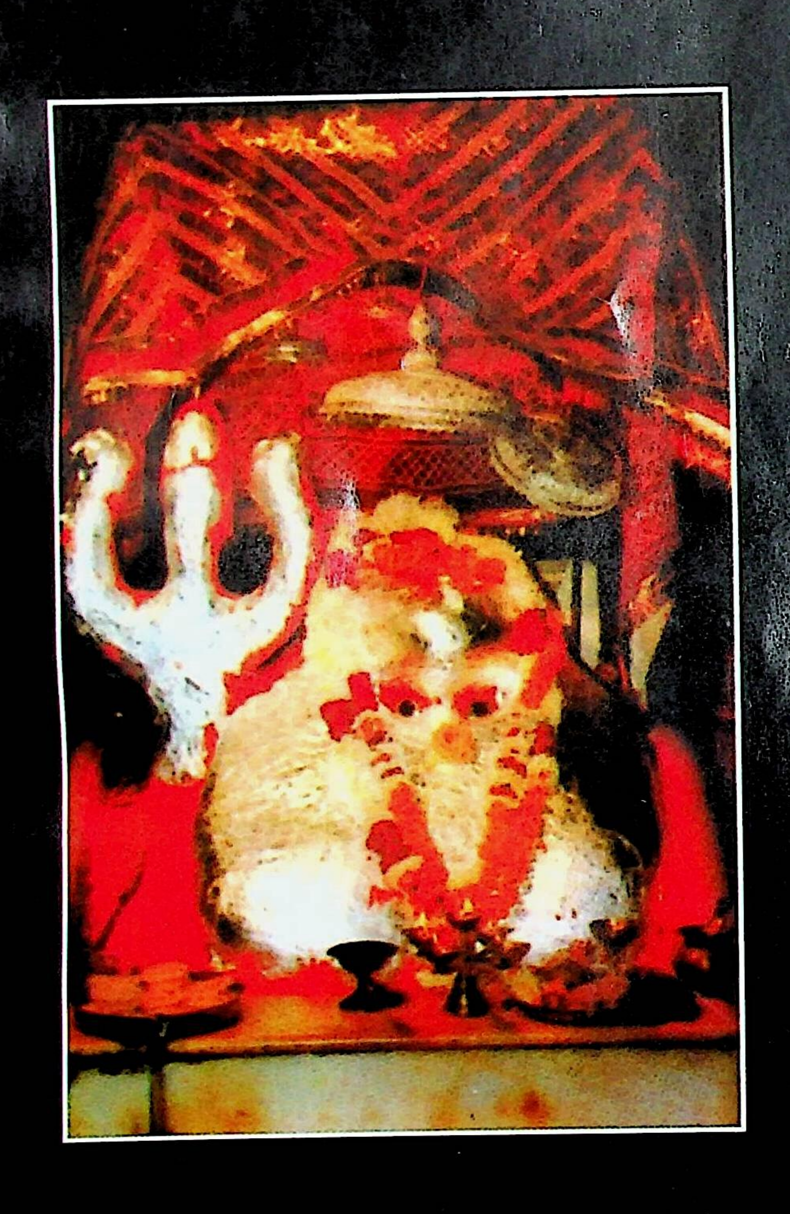
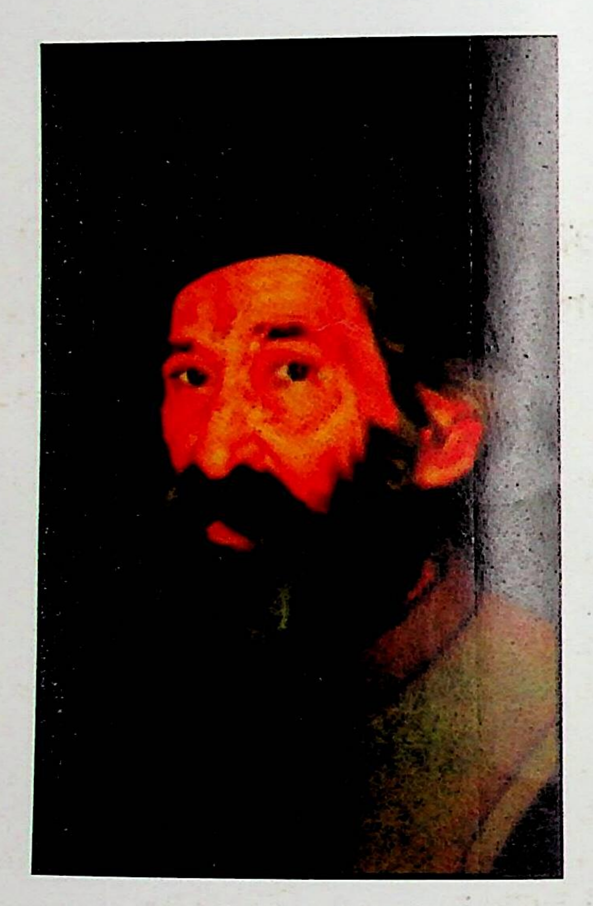
श्री भैरव चालीसा





स्व. श्री गंगा गीरी जी

ॐ

अष्टोत्तर भैरव नामावली

विनियोग :— ॐ अस्य श्री बटुक भैरव अष्टोत्तर शतनाम मंत्रस्य वृहद आरण्यक ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री बटुक भैरवो देवता, बं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं पृथकनाम मंत्रेण पाठे विनियोगः।

(1) ॐ भैरवाय नमः — विश्व का भरण–पोषण करने वाला, भयंकर शब्द करने वाला

(2) ॐ भूतनाथाय नमः — पंचभूतों के स्वामी

(3) ॐ भूतात्मने नमः

(4) ॐ भूतभावनाय नमः — पंचभूतों का निर्माता।

(5) ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः — पृथ्वी आदि 36 तत्वों को जानने वाला।

(6) ॐ क्षेत्रपालाय नमः — जीवका पालन करने वाला।

(7) ॐ क्षेत्रदाय नमः — राज्य आदि देने वाला।

(8) ॐ क्षत्रियाय नमः — क्षत अर्थात् दुःख से रक्षा करने वाला।

(9) ॐ विराजे नमः — विराट् स्वरूप।

(10) ॐ श्मशानवासिने नमः

(11) ॐ मांसाशिने नमः — माया का नाश करने वाला।

(12) ॐ खर्वराशिने नमः — कपाल में भोजन करने वाला।

(13) ॐ खरांतकाय नमः — खरदूषण का संहारकर्त्ता।

(14) ॐ रक्तपाय नमः — अपने भक्त का पालक।

(15) ॐ पानपाय नमः - अज्ञान का नाश करने वाला।
(16) ॐ सिद्धाय नमः - सबसिद्धियों से पूर्ण।
(17) ॐ सिद्धिदाय नमः - सब प्रकार की सिद्धि देने वाले।
(18) ॐ सिद्धिसेविताय नमः - सिद्धियाँ जिनकी सेवा करती हैं।
(19) ॐ कंकालाय नमः - कं अर्थात् शिर–ब्रह्मा के पाँचवें शिर को खंडित करने वाला।
(20) ॐ कालशमनाय नमः
(21) ॐ कलाकाष्ठाय नमः - संगीत आदि 64 कलाओं के साक्षात् स्वरूप।
(22) ॐ तनये नमः
(23) ॐ कवये नमः - समस्त शास्त्रों के ज्ञाता।
(24) ॐ त्रिनेत्राय नमः
(25) ॐ बहुनेत्राय नमः
(26) ॐ पिंगल-लोचनाय नमः
(27) ॐ शूलपाणये नमः
(28) ॐ खड्‌गपाणये नमः
(29) ॐ कपालिने नमः
(30) ॐ धूम्र लोचनाय नमः
(31) ॐ अभीरवे नमः - निर्भीक
(32) ॐ भैरवीनाथाय नमः
(33) ॐ भूतपाय नमः
(34) ॐ योगिनीपतये नमः
(35) ॐ धनदाय नमः
(36) ॐ धनहारिणे नमः
(37) ॐ धनवते नमः
(38) ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
(39) ॐ नागहाराय नमः
(40) ॐ नागपाशाय नमः
(41) ॐ व्योमकेशाय नमः
(42) ॐ कपालभृते नमः
(43) ॐ कालाय नमः

(44) ॐ कपालमालिने नमः
(45) ॐ कमनीयाय नमः
(46) ॐ कलानिधये नमः
(47) ॐ त्रिलोचनाय नमः
(48) ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः
(49) ॐ त्रिशिखिने नमः - तीन शिखाओं वाला।
(50) ॐ त्रिलोकषाय नमः - तीनों लोकों का पालक।
(51) ॐ त्रिनेत्रतापाय नमः
(52) ॐ डिंभाय नमः - सबको शुद्ध करने वाला।
(53) ॐ शान्ताय नमः
(54) ॐ शान्तजनप्रियाय नमः
(55) ॐ बटुकाय नमः
(56) ॐ बटुवेशाय नमः - ब्रह्मचारी के रूप में रहने वाला।
(57) ॐ खट्वांगधारकाय नमः - खाट के पाये के समान शस्त्र धारण करने वाला।
(58) ॐ भूताध्यक्षाय नमः
(59) ॐ पशुपतये नमः - आठ प्रकार के पाशों से जीव को मुक्त करने वाला।
(60) ॐ भिक्षुकाय नमः - भिक्षुको के सुख-सुविधा के दाता।
(61) ॐ परिचारकाय नमः
(62) ॐ धूर्ताय नमः - सृष्टि स्थिति, विनाश इत्यादि कृत्यों में जो दक्ष है।
(63) ॐ दिगम्बराय नमः
(64) ॐ शूराय नमः
(65) ॐ हरिणे नमः - दुःख का हरणकर्त्ता
(66) ॐ पांडुलोचनाय नमः
(67) ॐ प्रशांताय नमः
(68) ॐ शांतिदाय नमः
(69) ॐ शुद्धाय नमः
(70) ॐ शंकरप्रियबांधवाय नमः - कल्याणकारी शंकर जिनके प्रिय बन्धु हैं।

(71) ॐ अष्टमूर्तये नमः	-	जो आठ मूर्तियों यानि सूर्य, चन्द्र, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी एवं आत्मा में प्रकट हो रहा है।
(72) ॐ निधिशाय नमः	-	अपार सम्पत्ति का स्वामी
(73) ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः	-	समस्त विश्व का बोध ही जिनके ज्ञान चक्षु हैं।
(74) ॐ तपोमयाय नमः	-	तप से युक्त
(75) ॐ अष्टाधाराय नमः	-	मूलाधार, स्वाधिष्ठान इत्यादि सात चक्र एवं विष्णु वक्त्र आदि आठ स्थानों का आधार।
(76) ॐ षडाधाराय नमः	-	गुदा, लिङ्ग, नाभि, हृदय, कंठ तथा भ्रूमध्य जिसके आधार हैं।
(77) ॐ सर्पयुक्ताय नमः		
(78) ॐ शिखिसखाय नमः	-	अग्नि या शिखी के सखा यानि वायुरूप।
(79) ॐ भूधराय नमः	-	पृथ्वी को धारण करने वाला।
(80) ॐ भूधराधीशाय नमः		
(81) ॐ भूपतये नमः		
(82) ॐ भूधरत्मजाय नमः	-	भूधर यानि भगवान शंकर का जो पुत्र है।
(83) ॐ कंकालधारिणे नमः	-	अस्थि पंजर धारण करने वाला।
(84) ॐ मुंडिने नमः		
(85) ॐ नागयज्ञोपवीतवते नमः		
(86) ॐ जृम्भणाय नमः	-	प्रलय के समय मुख का विस्तार करने वाला जिससे समस्त जगत इनके मुख में प्रवेश कर जाता है।
(87) ॐ मोहनाय नमः		
(88) ॐ स्तंभिने नमः	-	दुःखों को रोकने वाला।
(89) ॐ मरणाय नमः	-	पापियों को मारने वाला।
(90) ॐ क्षोभणाय नमः	-	जो दुष्टें के संहार के लिए क्षोभ करता है।

(91) ॐ शुद्धनीलांजनप्रख्याय नमः - शुद्ध काजल के समान देह वाला।
(92) ॐ दैत्यघ्ने नमः
(93) ॐ मुंडभूषिताय नमः
(94) ॐ बलिभुजे नमः - यज्ञ के दिये गये भाग को भक्ष्य करने वाला।
(95) ॐ बलिभुङ्नाथाय नमः - बलि में दिये गये भोजन को भक्षण करने वाले देवताओं के स्वामी।
(96) ॐ बालाय नमः - अपने पराक्रम से दूसरों को परास्त करने वाला।
(97) ॐ बालपराःक्रमाय नमः - बाल यानि हरि के समान पराक्रमी।
(98) ॐ सर्वापत्तारणाय नमः - समस्त आपत्तियों से तारने वाला।
(99) ॐ दुर्गाय नमः - अनेकों प्रकार के कष्टों की अनुभूति के बाद जो प्राप्त होते हैं।
(100) ॐ दुष्ट भूतनिषेविताय नमः - दुष्ट प्राणी भी जिनकी सेवा करते हैं।
(101) ॐ कामिने नमः - इच्छाओं की पूर्ति करने वाला।
(102) ॐ कलानिधये नमः
(103) ॐ कांताय नमः - अत्यन्त कमनीय।
(104) ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः - भक्तों को लक्ष्मी प्रदान करने वाला।
(105) ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः - समस्त सिद्धियों को देने वाला।
(106) ॐ वैद्याय नमः - संसार को रोग से मुक्ति दिलाने वाला।
(107) ॐ प्रभवे नमः - सब कुछ करने में समर्थ।
(108) ॐ विष्णवे नमः - सर्वत्र व्यापक।

श्री भैरव चालीसा

।। दोहा ।।

श्री भैरव संकट हरन, मंगल करन कृपाल।
करहु दया निज दास पे, निशिदिन दीनदयालु।।

।। चौपाईयाँ ।।

जय डमरूधर नयन विशाला।
श्यामवर्ण, वपु महा कराला।।
जय त्रिशूलधर जय डमरूधर।
काशी कोतवाल, संकट हर।।
जय गिरिजासुत परम कृपाला।
संकटहरण, हरहु भ्रमजाला।।
जयति बटुक भैरव भयहारी।
जयति काल भैरव बलधारी।।
अष्ट रूप तुम्हरे सब गाये।
सकल एक तें एक सवाये।।
शिवस्वरूप शिव के अनुगामी।
गणाधीश तुम सब के स्वामी।।
जटाजूट कर मुकुट सुहावै।
भालचन्द्र अति शोभा पावै।।
कटि करधनी घूंघरू बाजै।
दर्शन करत सकल भय भाजैं।।
कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर।
मोरपंख को चंचर मनोहर।।
खप्पर खड्ग लिये बलवाना।
रूप चतुर्भुज नाथ बखाना।।

वाहन श्वान सदा सुखरासी।
तुम अनन्त प्रभु तुम अविनासी।।
जय जय जय भैरव भय भंजन।
जय कृपालु भक्तन मनरंजन।।
नयन विशाल लाल अति भारी।
रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी।।
बम बम बम बोलत दिनराती।
शिव कह भजहु असुर आरती।।
एक रूप तुम शम्भु कहाये।
दूजे भैरव रूप बनाये।।
सेवक तुमहिं तुमहिं प्रभु स्वामी।
सब जग के तुम अन्तर्यामी।।
रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा।
श्यामवर्ण कहुं होइ प्रचारा।।
श्वेतवर्ण पुनि कहा बखानी।
तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी।।
तीन नयन प्रभु परम सुहावहिं।
सुरनरमुनि सब ध्यान लगावहिं।।
व्याघ्रचर्म धर तुम जग स्वामी।
प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी।।
चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा।
निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा।।
क्रोधवन्त भूतेश कालधर।
चक्रतुण्ड दशवाहु व्यालधर।।
अहहिं कोटि प्रभु नाम तुम्हारे।
जयत सदा मेटत दुःख भारे।।
चौसठ योगिनी नाचहिं संगा।
क्रोधवान तुम अति रणरंगा।।

भूतनाथ तुम परम पुनीता।
तुम भविष्य तुम अहहु अतीता।।
वर्तमान तुम्हारो शुचि रूपा।
कालजयी तुम परम अनूपा।।
ऐलादी को संकट टारयो।
साद भक्त को, कारज सारयो।।
कालीपुत्र कहावहु नाथा।
तब चरणहु नावहुं नित माथा।।
श्री क्रोधेश कृपा विस्ताराहु।
दीन जानि मोहि पार उतारहु।।
भवसागर बूढ़त दिन-राती।
होहु कृपालु दुष्ट आराती।।
सेवक जानि कृपा प्रभु कीजै।
मोहिं भगति अपनी अब दीजै।।
करहुं सदा भैरव की सेवा।
तुम समान दूजो को देवा।।
अश्वनाथ तुम परम मनोहर।
दुष्टन कहं प्रभु अहहु भयंकर।।
तुम्हरो दास जहां जो होई।
ता कहं संकट परै न कोई।।
हरहु नाथ तुम जन की पीरा।
तुम समान प्रभु को बलवीरा।।
सब अपराध क्षमा कर दीजै।
दीन जानि आपुन मोहिं कीजै।।
जो यह पाठ करे चालीसा।
तापै कृपा करहु जगदीशा।।

।।दोहा।।

जय भैरव जय भूतपति, जय जय जय सुखकन्द।
करहु कृपा नित दास पै, देहु सदा आनन्द।।

श्री बटुक भैरव चालीसा

।। दोहे।।

विश्वनाथ को सुमरि मन, धर गणेश का ध्यान।
भैरव चालीसा पढ़ूं, कृपा करहु भगवान।।
बटुकनाथ भैरव भजूं, श्री काली के लाल।
मुझ दास पर कृपा कर, काशी के कुतवाल।।

।। चौपाइयां।।

जय जय श्री काली के लाला।
रहो दास पर सदा दयाला।।
भैरव भीषण भीम कपाली।
क्रोध वन्त लोचन में लाली।।
कर त्रिशूल है कठिन कराला।
गल में प्रभु मुंडन की माला।।
कृष्ण रूप तन वर्ण विशाला।
पीकर मद रहता मतवाला।।
रुद्र बटुक भक्तन के संगी।
प्रेतनाथ भूतेश भुजंगी।।
त्रैल तेश है नाम तुम्हारा।
चक्रदण्ड अमरेश पियारा।।
शेखर चन्द्र कपाल विराजै।
स्वान सवारी पै प्रभु गाजै।।
शिव नकुलेश चण्ड हो स्वामी।
वैजनाथ प्रभु नमो नमामी।।
अश्वनाथ क्रोधेश बखाने।
भैंरों काल जगत ने जाने।।

गायत्री कहैं निमिष दिगम्बर।
जगन्नाथ उन्नत आडम्बर।।

क्षेत्रपाल दशपाणि कहाये।
मंजुल उमानन्द कहलाये।।

चक्रनाथ भक्तन हितकारी।
कहैं त्रयम्बक सब नर नारी।।

संहारक सुनन्द तव नामा।
करहु भ्क्त के पूरण कामा।।

नाथ पिशाचन के हो प्यारे।
संकट मेटहु सकल हमारे।।

कत्यायू सुन्दर आनन्दा।
भक्त जनन के काटहु फन्दा।।

कारण लम्ब आप भयभंजन।
नमोनाथ जय जनमन रंजन।।

हो तुम मेष त्रिलोचन नाथा।
भक्त चरण में नावत माथा।।

तुम अंसितांग रुद्र के लाला।
महाकाल कालों के काला।।

ताप मोचन अरिदल नासा।
भाल चन्द्रमा करहिं प्रकाशा।।

श्वेत काल अरु लाल शरीरा।
मस्तक मुकुट शीश पर चीरा।।

काली के लाला बलधारी।
कहां तक शोभा कहहुं तुम्हारी।।

शंकर के अवतार कृपाला।
रहहुं चकाचक पी मद प्याला।।

काशी के कुतवाल कहाओ।

बटुकनाथ चेटक दिखलाओ।।

रवि के दिन जन भोग लगावें।

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें।।

दरशन करके भक्त सिहावें।

दारूड़ा की धार पियावें।।

मठ में सुन्दर लटकत झावा।

सिद्ध कार्य कर भैरों बाबा।।

नाथ आपका यश नहीं थोड़ा।

कर में सुभग सुशोभित कोड़ा।।

कटि घूंघरा सुरीले बाजत।

कंचन के सिंहासन राजत।।

नरनारी सब तुमको ध्यावें।

मनवांछित इच्छा फल पावें।।

भोपा हैं आपके पुजारी।

करें आरती सेवा भारी।।

भैरव भात आपका गाऊं।

बार-बार पद शीश नवाऊं।।

आपहि वारे छीजन धाये।

ऐलादी ने रुदन मचाये।।

बहिन त्यागि भाई कहं जावे।

तो बिन को मोहि भात पिन्हावे।।

रोये बटुकनाथ करुणाकर।

गिरे हिवारे में तुम जाकर।।

दुखित भई ऐलादी बाला।

तब हर का सिंहासन हाला।।

समय ब्याह का जिस दिन आया।
प्रभु ने तुमको तुरत पठाया।।
विष्णु कही मत बिलम लगाओ।
तीन दिवस को भैरव जाओ।।
दल पठान संग लेकर धाया।
ऐलादी को भात पिन्हाया।।
पूरन आस बहिन की कीन्हीं।
सुख चंदूरी सिर धरि दीन्हीं।।
भात भरा लौटे गुणग्रामी।
नमो अनमामी अन्तर्यामी।।
मैं हूं प्रभु बस तुम्हारा चेरा।
करुं आपकी शरण बसेरा।।

।।दोहे।।

जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार।
कृपा दास पर कीजिये, शंकर के अवतार।।
जो यह चालीसा पढ़ै, प्रेम सहित सतबार।
उस घर सर्वानन्द हो, वैभव बड़े अपार।।

श्री बटुक भैरव पंजर कवचम्

पार्वत्युवाच

देव देव महादेव संसार प्रिय कारक।
पंजरं बटुकस्यास्य कथनीयं मम प्रभो।।1।।

श्री शिव उवाच

पूर्वं भस्मासुरत्रासाद् भयविह्वन्तां स्वयम्।
पठनादेव मे प्राणा रक्षितः परमेश्वरि।।2।।

सर्वदुष्ट विनाशाय सर्व रोग निवारणम्।
दुःखशांति करं देवि ह्यल्पमृत्युभयापहम्।।3।।

राज्ञां वश्यकरं चैव त्रैलोक्य विजय प्रदम्।
सर्वलोकेषु पूज्यश्च लक्ष्मीस्तस्य गृहे स्थिरा।।4।।

अनुष्ठानं कृतं देवि पूजनं च दिने दिने।
बिना पंजरपाठेनं उत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।5।।

अस्य श्री बटुक भैरव पंजर कवचमंत्रस्य कालिग्निरुद्रः ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ॐ बटुक भैरवो देवता। ह्रां बीजं ॐ भैरवी वल्लभा शक्ति। ॐ दण्डपाणये नमः कीलकम्। मम सकल कामना सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।6।।

ॐ ह्रां प्राच्यां डमरुहस्तो रक्तवर्णो महाबलः।
प्रत्यक्षमहमीशान बटुकाय नमोनमः।।7।।

ॐ ह्रीं दंडधारी दक्षिणे च पश्चिमे खड्गधारिणे।
ॐ ह्रूं घटावादी मूर्तिरुत्तरस्यां दिशिस्तथा।।8।।

ॐ ह्रैं अग्निरूपो ह्याग्नेय्यां नैर्ऋत्यां च दिगम्बरः।
ॐ ह्रौं सर्वभूतस्थो वायव्ये भूतानां हितकारकः।।9।।

ॐ ह्श्रवाष्टसिद्धिश्च ईशाने सर्वसिद्धिकरः परः।
प्रत्यक्षमहमीशान बटुकाय नमोनमः।।10।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा ऊर्ध्वं खेचरिणं न्यसेत्।
रुद्ररूपस्तु पाताले बटुकाय नमोनमः।।11।।

ॐ ह्रीं बटुकाय मूर्ध्नि ललाटे भीमरूपिणम्।
आपदुद्धरणं नेत्रे मुखे च बटुकं न्यसेत्।।12।।

कुरु कुरु सर्वसिद्धिर्देहे गेहे व्यवस्थितः।
बटुकाय ह्रीं सर्वदेहे विश्वस्य सर्वतोदिशि।।13।।

आपदुद्धारकः पातु ह्यापादतलमस्तकम्।
हमक्षमलवरयुं पातु पूर्वे दडहस्तस्तु दक्षिणे।।14।।

हसक्षमलवरयुं नैर्ऋत्ये हसक्षमलवरयुं पश्चिमेऽवतु।
सर्वभूतस्थो वायव्ये हसक्षमलवरयुं घटावादिन उत्तरे।।15।।

हसः सोहं तु ईशाने चाष्टसिद्धिकरः परः।
शंक्षेत्रपाल ऊर्ध्वे तु पाताले शिवसन्निभः।।16।।

एवं दशदिशो दक्षेद्बटुकार्य नमोनमः।
इति ते कथित ह्रीं श्रीं क्ली ऐं सदावतु।।17।।

ॐ फ्रें हुँ फट् च सर्वत्र त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।
लक्ष्मी ऐं श्रीं ल पृथिव्यां च आकारो हं ममावतु।।18।।

स्त्रौं प्रौं ज्रौं ॐ यं वायव्यां रं रं रं तेजोरूपिणम्।
ॐ कं खं गं घं ङं बटुक चं छं जं झं ञं कपालिनम्।।19।।

टं ठं डं ढं णं क्षत्रेशं तं थं दं धं नं उमाप्रियम्।
पं फं बं भं मं ममरक्ष यं रं लं भैरवोत्तमम्।।20।।

वं शं षं सं आदिनाथं लंक्षं वै क्षेत्र पालकम्।
एवं पजरमाख्यातं सर्वसिद्धिकरं भवेत्।।21।।

दु:ख दारिद्रय शमनं रक्षक सर्वतो दिशः।
आवश्यं सर्वतो वक्ष्यं सर्वबीजैश्च संपुटम्।।22।।

सर्वरोगहरं दिव्यं सर्वत्र सुख माप्नुयात्।
एवं रहस्यमाख्यातं देवानामपि दुर्लभम्।।23।।

वज्रपंजरनामेदं ये श्रृण्वंति वरानने।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिलाभः सुखं जपः।।24।।

लक्ष्मी मनोरमा बुद्धिस्तेपां गेहे व्यवस्थिता।
सुशीलाप सुदीताय गुरुभक्तिपराय च।।25।।

तस्य शीघ्रं च दातव्यमन्यथा न कदाचन।
गोपनीयं प्रयत्नेन सर्व गोप्य मयं भवेत्।।26।।

यस्मै कस्मै न दातव्यं न दातव्यं कदाचन।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं भैरवा क्षरम्।।27।।

एक कालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः।
सर्व पाप विनिर्मुक्तो शिवेन सह मोदते।।28।।

।।इति श्री शक्तिरहस्ये श्री बटुक भैरव पंजर कवचम् समाप्तम्।।

भैरवदेव की स्तुति

आप भैरवदेव के किसी भी रूप स्वरूप की आराधना-पूजा करें, यह स्तुति और अन्य पृष्ठों पर अंकित आरतीयां गाई जाएंगी, परन्तु गायन करते समय मनमन्दिर में वही रूप बसा लें जिसकी आप पूजा कर रहे हैं। स्तुति और आरती के अन्त में भैरवदेव के उसी नाम की जय तो आप बोलेंगे ही।

नमो भैरव भीम, भीषण कृपालम्।
नमो चन्द्र तुण्डं, बटुकनाथ दयालम्।।

नमो त्रैलतेराम, नमो प्रेत नाथम्।
नमो चद्रशेखर दिपै चन्द्र भालम्।।

नामो रुद्र अमरेश, नकलेश स्वामी।
नमो विश्व भूतेश, जौमेष ब्यालम्।।

दिगम्बर अडम्बर, नमो ताप मोचन।
त्रिलोचन विमोचन गले मुंडमालम्।।

नमो क्षेत्र पालम् महाकाल कालम्।
नमो भीम लोचन भुजंगी विशालम्।।

नमो चक्रपाणि, करण लम्ब उन्नत।
नमो शिवकपिलं ब्यालविक्राल चालम्।।

नमो सुन्दरानन्द, आनन्द कन्दम्।
उमानन्द काशी, नमो कोतवालम्।।

नमो अम्बनाथम्,नमो प्रेत बैजनाथम्।
नमो जगन्नाथम् नमो चक्रनाथम्।।

नमो भूत नाथम् नमो बैजनाथम्।
सुवन विश्वनाथम् कृपा नाथ नाथम्।।

नमो नाथ अशताँग, क्रोधेश मंजुल।
नमो क्रोध वत्स, त्रयम्बक भुजालम्।।

नमो नाथ दशपांण, कृत्यायु बामन।
नमो नाथ अस्तुति, करत नत्थूलालम्।।

श्री भैरवदेव की मधुर आरती

जय जय जय भैरव बाबा।
स्वामी जय जय भैरव बाबा।।

नमो विश्व भूतेश भूजंगी, मंजुल कहलावा।
उमानन्द अमरेश विमोचन जनपद सिरनावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

काशी के कुतवाल आपको सकल जगत ध्यावा।
स्वान सवारी बटुकनाथ प्रभु मद पी हरषावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

रवि के दिन जग भोग लगावै मोदक मन भावा।
भीषण भीम कृपालु त्रिलोचन खप्पर भर खावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

शेखर चन्द्र कृपालु शशी प्रभु मस्तक चमकावा।
गलमुण्डन की माल सुशोभित सुन्दर दरसावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

नमो नमो आनन्द कन्द प्रभु लटकत मठ झावा।
कर्ष तुण्ड शिव कपिल त्रयम्बक वश जग में छावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

जो जन तुम्हारो ध्यान लगावत संकट नहिं पावा।
छीतर मल जन शरण नुम्हारी आरती प्रभु गावा।।
ॐ जय जय भैरव बाबा।।

दोहा- मेरी भी सुन प्रार्थना, मेटो सारे क्लेश।
इच्छा पूरी सब करो, जय जय भूतेश।।
मुझे भरोसा आपका, तुम देवी के लाल।
इस धरणी पर भक्त को, कर दो मालामाल।।

श्री भैरव जी की आरती

जय भैरव देवा, प्रभु, जय भैरव देवा।
सुरनर मुनि सव करते, प्रभु तुम्हारी सेवा।। जय०।।

तुम्हीं पाप उद्धारक, दु:ख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुख कारक, भीषण वपु धारक।। जय०।।

वाहन श्वान विराजत, कर त्रिशूलधारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी।। जय०।।

तुम बिन शिव की सेवा, सफल नहीं होवे।
चतुर्वर्तिका दीपक, दर्शन दु:ख खोवे।। जय०।।

तेल चटक दधिमिश्रित माषावली देरी।
कृपा कीजिए, भैरव, करो नहीं देरी।। जय०।।

पांव घूंघरू बाजत, डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक, जन मन हरषावत।। जय०।।

श्री भैरव की आरती, जो कोई गावे।
सो नर जग में निश्चय, मनवांछित पावे।। जय०।।

कालभैरवाष्टकम्

देवराज सेव्यमान पापनांघ्रि पंकजं,
व्याल यज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगम्बरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥
भानुकोटि भास्वरं भवाब्धि तारकं परं,
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
काल कालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥
शूलटंक पाशदण्ड पाणिमादि कारणं
श्यामकायमादिदेबमक्षयं निरामयम्।
भीमविक्रमप्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥
भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्त चारु विग्रहं
नितान्तभक्तवत्सलं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेम किंकिणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥
धर्मसेतु पालकं त्वधर्ममार्ग नाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं बिभुम्।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभिताङ्ग मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥

रत्नपादुकाप्रभाभिराम पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्ट दैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशंन करालदंष्ट्र मोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥

अट्टहास भिन्नपद्मजाण्डकोश सन्ततिं
दृष्टिपात नष्टपापजालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥

भूत संघ नायकं विशाल कीर्ति दायकं
काशिवास लोकपुण्य पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविंद पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं,
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यबर्द्धनम्।
शोकमोह दैन्वलोभ कोप ताप नाशनं
ये प्रयान्ति कालभैरवांध्रि सन्निधिं ध्रुवम्॥

॥ इति श्रीमच्छ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

श्री तीक्ष्णादंष्ट्रकालभैरवाष्टक्

यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्तिम् शिरमुकुटजटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्।।
दं दं दं दीर्घ कायं विकृतनखं मुखं त्यूर्ध्वरोमं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।। 1।।
रं रं रं रक्तवर्ण कटकटिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं।
घं घं घं घोष घोषं घघघघ घटितं घर्घरं घोरनादम्।।
कं कं कं कालपाशं धृकधृकधृकितं ज्वालितं कामदाहं।
तं तं तं दिव्यदेहं प्रणमत सततं भैरवंक्षेत्रपालम्।। 2।।
लं लं लं लं वदन्तं ललललल ललितं दीर्घजिह्वाकरालं।
धुं धुं धुं धूमवर्णं स्फुट विकट मुखं भास्कर भीमरूपम्।।
रूं रूं रूं रुण्डमालं रवितम नियतं ताम्रनेत्र करालं।
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।। 3।।
वं वं वं वायुवेग नतजनदमिनं ब्रह्मवारः परं तं।
खं खं खं खड्ग हस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीम रूपम्।।
चं चं चं चं चलित्वा चलचल चलित च्चालितं भूमिचक्रं।
मं मं मं मायिरूपं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम्।। 4।।
शं शं शं शङ्खहस्तं शशिकरधवलं मोक्ष सम्पूर्णतेजं।
मं मं मं मं महान्तं कुलमकुलकुलं मन्त्रगुप्तं सुनित्यम्।।

यं यं यं भूतनाथ किलकिलकिलितं बालकेलि प्रधानं।
अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम्।। 5।।
खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं कालकालं करालं।
क्षं क्षं क्षं क्षप्रिवेग दहदहदहनं तप्तसन्दीप्यमानम्।।
हौं हौं हौंकार नादं प्रकटित ग्रहणं गर्जितैः भूमिकम्मं।
बं बं बं बाललीलं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम्।। 6।।
सं सं सं सिद्धियोगं सकल गुणधनं देवदेवं प्रसन्न।
पं पं पं पद्मनाभं हरिहरनयनं चन्द्रसूर्याग्निनेत्रम्।।
ऐं ऐं ऐश्वर्यनाथं सततभयहर पूर्वदेव स्वरूपं।
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम्।। 7।।
हं हं हं हंसहासं हसितकलहकं मुक्तयोगाट्टहास।
धं धं धं क्षेत्र रूपं शिरमुकुटजटा बन्ध बन्धाग्रहस्तम्।।
टं टं टङ्कारनाथं त्रिदशलटलटं कामगर्वापहारं।
भृं भृं भृं भूतनाथं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम्।। 8।।
इत्येवं कामयुक्तं प्रपठित नियतं चाष्टकं भैरवस्य।
निर्विघ्नं दुःखनाशं सुरभयहरणं डाकिनी शाकिनीनाम्।।
नश्येद्धि व्याघ्रसर्प वहवहसलिले राज्यश सस्य शून्यं।
सर्वानश्यन्ति दूरं विपदइति भृशं विन्तमात्सर्व सिद्धम्।। 9।।

भैरवस्य अष्टकम इदम् षड्मासं यः पठेत् नरः।
स याति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वर।।
सिन्दूर अरुणगात्रंच सर्वजन्म विनिर्मितम्।
मुकुटाग्रचघरं देवं भैरव प्रणमाम्यहम्।।

।। इति श्री तीक्ष्णदंष्ट्रकाल भैरवाष्टकं समाप्तम्।।

बटुक भैरव कल्याण के कैंद्र

डॉ. भगवतीशरण मिश्र

यों तो बटुक भैरव स्थान की प्राचीन मूर्ति के दर्शन एवं पूजन-अर्चन से असंख्य लोगों की मनोकामा पूर्ण होती हैं, पर जिनमें आस्था अथवा विश्वास है, उनकी प्राय: हर मनोवांक्षा यहां पूर्ण होकर रहती है। बटुक भैरव के समक्ष नतमस्तक हो अनेक आप्त काम हुए हैं।

नेहरू पार्क (विनय मार्ग) के पास अशोका होटल के पास अवस्थित इस प्राचीन स्थान के संबंध पें 'कादम्बिनी' के सन् 1992 के तंत्र-विशेषांक में मैंने कई विषयों पर चर्चा के क्रम पें इस स्थान का थी उल्लेख किया था। उस समय से अब तक इस मंदिर के संबंध में मुझे अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं। गत रविवार को वहां गया तो दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ी पड़ी थी। विगत कई वर्षों से मैं दिल्ली से बाहर-बाहर ही हूं, अत: मेरे उस लेख में बटुक भैरव के उल्लेख से, यहां दर्शनार्थियों की भीड़ इस तरह बढ़ जाएगी, इसका मुझे विश्वास नहीं था। मंदिर-प्रांगण का भी विस्तार हुआ है। कई और देवी-देवताओं की मूर्तियां भी यहां बैठ गयी हैं। लोगों ने बताया कि मेरे उस निबंध के पश्चात् यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

"किसी को लाभ भी हुआ?" मैंने एक भक्त से पूछ लिया।

"बिना लाभ के कौन कहीं जाता है जी?" उस जाट-से लगते व्यक्ति ने कहा।

मैने देखा केवल गंवार या अनपढ़ लोगों तथा तथाकथित अंधविश्वासी लोगों की ही भीड़ नहीं थी वहां। कई सुशिक्षित और संभ्रांत लोग भी थे। कई लेटेस्ट मॉडलों की गाड़ियां खड़ी थीं वहां। सूटेड-बूटेड लोग अपने कपड़ों की 'क्रीज' की चिंता किये बिना भैरवजी के समक्ष साष्टांग हो रहे थे।

पुजारी ने कहा कि उल्लेख तो आपने इस स्थान का थोड़ा हरी किया था, पर एक की मनोकामना पूर्ण होने पर उसने दूसरे को बतायी, दूसरे ने तीसरे को और इस तरह दर्शनार्थियों की संख्या बढ़ती गयी। भैरव का दिन रविवार है, जैसे हनुमान का मंगल और शनिवार। यही कारण है कि और दिनों को भी यहां भक्त तो आते ही हैं। रविवार को सुबह से लेकर रात के दस बजे तक दर्शनार्थियों का यहां तांता लगा रहता है।

भैरव जी का श्रृंगार

भैरव को सिंदूर और सरसों का तेल बहुत प्रिय है, अतः सिंदूर और सरसों के तेल का मिश्रण कर मूर्ति पर लेप किया जाता है। इसे 'चोला' चढ़ाना भी बोलते हैं। जो व्यक्ति अपनी किसी मनोकामना की पूर्ति होने पर 'चोला' चढ़ाने का प्रण लेता है, वह अवश्य ऐसा करता है। पुजारी सब कुछ कर देते हैं। इसके लिए कोई 'फी' या 'चार्ज' नहीं है। चोला चढ़ाने के लिए पुरोहित से सम्पर्क करे। 'चोला' चढ़ाने का आलम तो यह है कि मूर्ति पर कम-से-कम छह इंच मोटी परत तो जम ही गयी है। चार-पांच वर्ष पूर्व तत्कालीन पुजारी ने मेरे सामने एक बार यह परत उतरवायी थी, तो वह प्रायः उती ही मोटी थी। पुरोहित राजेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया की बाबा जी चोले की परत साल में एक बार बाबा जी अपने आप छोडते हैं जिसका कोई दिन मास या समय नही है।

आवश्यक नहीं कि सभी लोग चोला ही चढ़ायें। कई लोग मनोकामना पूर्ति पर, उचित समझते हैं तो यहां पुनः आकर दर्शन कर जाते हैं-प्रसाद ग्रहण कर जाते हैं। कोई दूर के हुए तो नहीं भी आते हैं। बाबा को वहीं से प्रणाम कर लेते हैं और कुछ रुपये बाबा की सेवा के लिए भेज देते हैं। कुछ ऐसा भी नहीं करते, अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु बटुक भैरव का स्मरण कर ही संतोष कर लेते हैं। पर भैरवजी तटस्थ हैं। वह सबका भला करते हैं, अमीर का भी, गरीब का भी। जो आकर पुनः आये, उसका भी, जो नहीं लौटे, उसका भी। ये सब अनुभव की बातें हैं, अंतरंग भक्तों से सुनी-सुनायी भी। पहले ही कहा कि विश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है, आपके अंदर और कुछ हो या नहीं। संस्कृत में इसी हेतु कहा गया है-**विश्वासं फल दायकं**।

विश्वास पर हर जगह, हर धर्म में बल दिया गया है। बाइबल में भी यह कहा गया है कि 'यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी विश्वास है, तो तुम इस पर्वत को कहो कि यहां से हट जाओ, तो वह हट जाएगा।'

स्थान की शक्ति

पर केवल विश्वास से ही काम नहीं चलता। आप में विश्वास तो भरपूर हो पर स्थान में शक्ति नहीं हो, आपको कुछ नहीं मिलेगा। विश्वास से संचालित दैवी-शक्ति ही आपकी सहायता कर सकती है। मैंने बहुत सारे भैरव स्थानों के दर्शन किये हैं—वाराणसी के कोतवाल काल भैरव से लेकर उज्जैन के महाकाल भैरव तक के। मैं नहीं कहता कि इन स्थानों में शक्ति नहीं है, पर मैं इतना मानता हूं कि दिल्ली के इस बटुक भैरव में मनोकामना पूर्ति और भव-बाधा दूर करने की अद्भुत शक्ति है। इसके प्रमुखतः ये कारण हैं—

पहला, यह कि यह मंदिर अति प्राचीन है। कहते हैं स्वयं भीम ने इस भारी-भरकम मूर्ति को कहीं दूर से लाकर इसकी यहां स्थापना की थी। जो स्थान जितना ही प्राचीन होता है, वहां शक्ति भी अधिक होती है क्योंकि, दीर्घ काल से पूजा-पाठ, प्रार्थना-उपासना होने से वहां एक अद्भुत अध्यात्मिक ऊर्जा की सृष्टि हो जाती है।

दूसरा, यह मूर्ति एक कुंए के ऊपर स्थापित है। कई सौ वर्षों से जो भी जल मूर्ति के अंदर या आस-पास डाला गया वह अंदर ही चला गया। मंदिर में नहीं फैला अथवा किसी नाली आदि के सहारे भी बाहर नहीं गया। यह तथ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि, भैरव-उपासना में यह बताया गया है कि कुंए के किनारे यदि भैरव कि मिट्टी की भी मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की जाए, तो वह फलवती होती है। यहां तो मूर्ति ही कुंए के ऊपर है।

तीसरा, यहां की भैरव मूर्ति की आंखें किसी विशेष धातु या पत्थर की बनी हैं। उन पर दृष्टि डालने से ही अंदर कुछ-न-कुछ होने लगता है। निश्चय ही इस मूर्ति की स्थापना किसी विशेष तांत्रिक सातविक विधि से हुई है।

चौथी और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यहां कोई बीच का माध्यम नहीं। पुजारी मात्र भैरव की पूजा के लिए है। वह किसी से कुछ मांगता नहीं, न वह अपने को तांत्रिक आदि ही बतलाता है। यहां आप हैं और आपके बटुक भैरव। आप श्रद्धावश मूर्ति पर कुछ चढ़ा दें, वह, अलग बात है। लोभ-लालच से रहित होने के कारण ही यहां अप्रतिम ऊर्जा बनी हुई है और लोगों को अपने दुःख-दारिद्रय तथा भय-प्रेत बाधा से मुक्ति तो मिलती ही है, जैसा आरंभ में

कहा कि उनकी मनोवांक्षा भी पूर्ण होती है। फिर कहूं कि यह मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर लिखा जा रहा है। अब आप मुझसे अपने अनुभव को व्यक्त करने को नहीं कहकर स्वयं वहां जाएं और अपना निजी अनुभव प्राप्त करें।

दिल्ली और उसके आसपास के वासी यदि पीड़ित हैं, तो मेरी दृष्टि से दुःख की बात है; जहां बटुक भैरव का इतना शक्तिशाली स्थान है, वहां के लोग क्यों उत्पीड़ित और निराश हों? समरण रखें मैं केवल भैरव शक्ति की बात कर रहा हूं, वहां के पुजारी की नहीं। आप चाहें भैरव मूर्ति पर कुछ चढ़ायें अथवा नहीं, पुजारी को उससे कुछ लेना-देना नहीं।

- 61, आनन्दपुरी, पटना

भीम द्वारा स्थापित बटुक भैरव का एक अद्भुत स्थल

वाराणसी के बटुक भैरों से जुड़ा एक सिद्धस्थल देश की राजधानी दिल्ली में भी है। दक्षिणी दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री निवास के निकट नेहरु पार्क में बटुक भैरव का सिद्ध स्थान भैरव साधकों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस स्थल की कथा बनारस के बटुक भैरव से जुड़ी है। महाभारत कालीन बटुक भैरव की मूर्ति एक कुएं पर स्थापित है। आश्चर्य को बात यह है कि मूर्ति पर चढ़ाया गया कोई भी तरल पदार्थ मूर्ति के पादस्थल पर अवस्थित एक छिद्र होते हुए कुएं में चला जाता है। लेकिन कुआं महाभारत काल से आज तक कभी भरा नहीं। भैरव की साधना किसी कुएं के पास अधिक सिद्धिदायिनी होती है। इसलिए यहां उपासकों की इच्छाएं चमत्कारिक रूप से पूरी होती है।

बटुक भैरव की लगभग दो फुट की प्रतिमा नेहरु पार्क स्थित एक प्राचीन कुएं की मुंडेर पर गदाधारी भीमसेन द्वारा स्थापित की गयी थी। पूरे प्रसंग की विस्तृत चर्चा स्कंद पुराण में की गयो है। प्राचीन कथाओं के अनुसार हस्तिनापुर में पांडवों के किले की रक्षा के लिए भगवान नारद मुनि ने बनारस के बटुक भैरव को लाकर द्वारपाल के रूप में स्थापित करने की सलाह दी थी। कौरवों और पांडवों के बीच महाभारत के दौरान किले की रक्षा का प्रश्न उठा था। नारद मुनि की सलाह पर भीमसेन बटुक भैरव से द्वारपाल के रूप में किले की रक्षा का भार स्वीकार करने संबंधी आग्रह के लिए वाराणसी गये। भैरव शिवो के स्वरूप माने जाते हैं और देवी की साधना में यह महत्वपूर्ण भी होते हैं। गांवों के देवी मंदिरों में देवी को पिंडियां के साथ भैरव काभी पिंड होता है।

प्राप्त पौराणिक कथाओं के अनुसार भीमसेन का आग्रह मानकर बटुक भैरव पांडव किले की रक्षा के लिए तैयार हो गये। सर्वाधिक शक्तिशाली बटुक भैरव ने अपना वजन बिल्कुल हल्का कर दिया। भीमसेन के कंधों पर बैठ वह इस शर्त पर

हस्तिनापुर जाने को तैयार हो गये कि जहां कहीं भी उन्हें उतारा जाएगा उनकी स्थापना वहीं करनी होगी। वारणसी से हस्तिनापुर की लंबी यात्रा तय करने के अंतिम दौर में भैरव ने भीम को दी गयी शर्त की परीक्षा लेनी चाही। पांडव किले से लगभग बारह किलोमीटर दक्षिण एक स्थान पर भीमसेन को बहुत तेज प्यास लगी। उन्होने पास में ही एक विशाल कुएं की मुंडेर पर बटुक भैरव को कंधे से उतारकर सुरक्षित रख दिया और कुएं से जल खींचकर अपनी प्यास बुझाने में लीन हो गये। इससे निवृत्त होने के बाद भीमसेन ने जबपुनः बटुक भैरव को उठाना चाहा तो लाख प्रयास करने के बाद थी वह हिले तक नहीं। भीमसेन को फिर उन्होंने उस शर्त की याद दिलाई। किले की चिंता के भाव से विह्वल भीमसेन द्वारा प्रार्थना करने पर बटुक भैरव ने अपनी थोड़ी सी जटाएं उखाड़कर उन्हें दी। कहा कि जटाएं ले जाकर किले के द्वार पर उनकी स्थापना करें। बटुक भैरव मूल रूप से कुएं की मुंडेर पर ही अवस्थित हो गये। भीमसेन को बटुक भैरव ने आश्वस्त कराते हुए कहा कि किले के बाहर स्थापित भैरव का नाम किलकारी भैरव होगा। भैरव ने भीमसेन को कहा था कि जब जब पांडव किले पर कोई खतरा आएगा उनकी जटाएं किलकार करेंगी। किलकारियां सुनकर बटुक भैरव कुएं की मुंडेर से उठकर किले की रक्षा के लिए जाएंगे। राजधानी में प्रगति मैदान के पास पांडव किले के बाहर स्थापित किलकारी भैरव के प्राचीन मंदिर में आज भी रविवार को बहुत भीड़ होती है। रविवार, मंगलवार और शनिवार भैरव के प्रिय दिन हैं। छुटी के दिन रविवार को यहां भक्तों की लंबी कतार सुबह से ही लगनी शुरु हो जाती है।

नेहरु पार्क स्थित बटुक भैरव भीमसेन के कंधों पर बनारस से लाए गये मूल बटुक भैरव ही हैं। बाद में कुएं को पाटकर मंदिर बना दिया गया। लेकिन कुएं से भैरव की प्रतिमा का तारतम्य यथावत ही जुड़ा हुआ है। भैरव के प्रिय चमेली के तेल, सिंदूर और अन्य योग्य पदार्थों के साथ नियमित रविवार को पूजा करने वाले भक्तगण अपनी जटिल समस्याओं का हल भी यहां असानी से पा जाते हैं। भैरव को सरसों का तेल भी प्रिय है। सरसों के तेल को चौमुखी दीपक में डाल कर (जो मन्दिर प्रागण के अग्नि कोड में जल रहा है) भैरव बाबा जी का ध्यान एवं प्रार्थना करने वाले भक्त दुसरे तीसरे रविवार आते ही चमत्कारिक लाभ पाने लगते हैं। बटुक भैरव के साथ दो गण भी आए थे। उनके पिंड मंदिर के इर्द गिर्द स्थापित हैं। प्राचीन मंदिर का भी विस्तृत इतिहास नहीं मिलता। बिड़ला मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित इस बटुक भैरव मंदिर के पुराने पुजारी गंगागिरी के पुत्र राजेन्द्र कुमार शर्मा बताते हैं कि यहां आने वाला एक भी भक्त निराश नहीं लौटा। इसका भी कोई विवरण निराश नहीं मिलता कि यहां आदिकाल से पुजारी कौन है। लेकिन सिद्ध साधाकों का आना यहां निरंतर जारी है।

NOTES

NOTES

पुजारी श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा
श्री बटुक भैरव मंदिर
नेहरू पार्क
चानक्य पुरी
नई दिल्ली 110 023

फोन: 9810652340